39 Chapter

आधुनिक पुस्तकालयों में डिजिटल पहुंच और समावेशन सुनिश्चित करना

Nandan Singh[1], Sushila Bisht[2] Qumar Abbas[3]

[1]Assistant Librarian IIHMR University, Jaipur, Rajasthan India
[2] Librarian, Bansal Public School, Pratap Nagar, Jaipur, Rajasthan India
[3]Deputy Librarian, Jawaharlal Nehru Medical College, Ajmer, Rajasthan India

Summary

डिजिटल युग में सूचना के स्वरूप, संग्रहण और प्रसार में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है। आधुनिक पुस्तकालय अब केवल मुद्रित सामग्री तक सीमित न रहकर डिजिटल सूचना और ज्ञान के केंद्र के रूप में विकसित हो रहे हैं। किंतु समाज के विभिन्न वर्गों के बीच डिजिटल असमानता आज भी एक गंभीर चुनौती बनी हुई है। डिजिटल पहुंच और समावेशन का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को सूचना प्रौद्योगिकी, इंटरनेट और डिजिटल संसाधनों तक समान अवसर प्रदान करना है। यह शोध पत्र आधुनिक पुस्तकालयों में डिजिटल पहुंच और समावेशन की अवधारणा, उसकी आवश्यकता, चुनौतियों तथा उन्हें दूर करने की रणनीतियों का विश्लेषण करता है। साथ ही पुस्तकालय पेशेवरों की भूमिका और भविष्य की दिशा पर भी प्रकाश डालता है।

Keywords: डिजिटल पहुंच, डिजिटल समावेशन, आधुनिक पुस्तकालय, डिजिटल साक्षरता, सूचना प्रौद्योगिकी

भूमिका

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के विकास ने ज्ञान समाज की नींव को मजबूत किया है। आज सूचना का अधिकांश भाग डिजिटल स्वरूप में उपलब्ध है। ऐसे में पुस्तकालयों की भूमिका केवल सूचना संग्रहण तक सीमित न रहकर सूचना तक समान और न्यायसंगत पहुँच प्रदान करने तक विस्तृत हो गई है।

डिजिटल समावेशन का अर्थ है समाज के प्रत्येक वर्ग—ग्रामीण, शहरी, आर्थिक रूप से कमजोर, दिव्यांग, वृद्ध एवं वंचित समुदाय—को डिजिटल संसाधनों से जोड़ना। आधुनिक पुस्तकालय इस लक्ष्य की प्राप्ति में सेतु का कार्य कर सकते हैं।

डिजिटल पहुंच की अवधारणा

डिजिटल पहुंच का तात्पर्य केवल इंटरनेट कनेक्शन से नहीं है, बल्कि इसमें निम्नलिखित तत्व शामिल हैं:

- डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता
- इंटरनेट और नेटवर्क सुविधाएँ
- ई-पुस्तकें, ई-जर्नल और ऑनलाइन डेटाबेस
- उपयोगकर्ता सहायता एवं तकनीकी मार्गदर्शन

पुस्तकालय डिजिटल पहुंच को सशक्त बनाने के लिए सार्वजनिक कंप्यूटर, वाई-फाई, डिजिटल रिपॉजिटरी और ओपन एक्सेस संसाधनों की सुविधा प्रदान करते हैं।

डिजिटल समावेशन की आवश्यकता

डिजिटल समावेशन सामाजिक समानता और शैक्षणिक विकास के लिए आवश्यक है। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

1. सूचना तक समान अधिकार सुनिश्चित करना
2. डिजिटल विभाजन (Digital Divide) को कम करना
3. शिक्षा और शोध को सुलभ बनाना
4. आजीवन सीखने (Lifelong Learning) को बढ़ावा देना
5. सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान

पुस्तकालय, विशेष रूप से सार्वजनिक और शैक्षणिक पुस्तकालय, डिजिटल समावेशन के प्रमुख केंद्र बन सकते हैं।

आधुनिक पुस्तकालयों में डिजिटल सेवाएँ

आधुनिक पुस्तकालयों द्वारा प्रदान की जाने वाली प्रमुख डिजिटल सेवाएँ हैं:

- ई-पुस्तकें और ई-जर्नल सेवाएँ
- डिजिटल संदर्भ सेवा (Digital Reference Service)
- ऑनलाइन कैटलॉग (OPAC)
- संस्थागत रिपॉजिटरी
- डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण कार्यक्रम

ये सेवाएँ उपयोगकर्ताओं को समय और स्थान की सीमाओं से मुक्त करती हैं।

डिजिटल समावेशन में आने वाली चुनौतियाँ

डिजिटल पहुंच और समावेशन के मार्ग में कई बाधाएँ हैं, जैसे:

- डिजिटल साक्षरता की कमी
- तकनीकी अवसंरचना का अभाव
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच अंतर
- भाषा संबंधी बाधाएँ
- दिव्यांगजनों के लिए सुलभ तकनीक की कमी
- सीमित वित्तीय संसाधन

इन चुनौतियों का समाधान किए बिना डिजिटल समावेशन का लक्ष्य प्राप्त करना कठिन है।

डिजिटल पहुंच और समावेशन सुनिश्चित करने की रणनीतियाँ

डिजिटल समावेशन को सशक्त बनाने के लिए निम्नलिखित रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं:

- डिजिटल साक्षरता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम
- बहुभाषी डिजिटल संसाधनों का विकास
- दिव्यांग उपयोगकर्ताओं के लिए सहायक तकनीक
- पुस्तकालय कर्मियों का सतत प्रशिक्षण
- सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं के साथ सहयोग
- ओपन एक्सेस और मुक्त शैक्षणिक संसाधनों का प्रचार

पुस्तकालय पेशेवरों की भूमिका

पुस्तकालय पेशेवर डिजिटल युग में केवल सूचना संरक्षक नहीं, बल्कि सूचना मार्गदर्शक बन चुके हैं। वे उपयोगकर्ताओं को डिजिटल संसाधनों के चयन, उपयोग और मूल्यांकन में सहायता प्रदान करते हैं। उनकी सक्रिय भूमिका डिजिटल समावेशन को व्यवहारिक रूप देती है।

भविष्य की दिशा

भविष्य में पुस्तकालय स्मार्ट तकनीकों, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से और अधिक समावेशी बन सकते हैं। यदि नीति निर्माण, संसाधन और प्रशिक्षण पर उचित ध्यान दिया जाए, तो पुस्तकालय डिजिटल समानता के सशक्त केंद्र बन सकते हैं।

निष्कर्ष

आधुनिक पुस्तकालय डिजिटल पहुंच और समावेशन को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। डिजिटल सेवाओं, समावेशी नीतियों और प्रशिक्षित मानव संसाधनों के माध्यम से पुस्तकालय डिजिटल विभाजन को कम कर सकते हैं। इस प्रकार पुस्तकालय ज्ञान आधारित, समावेशी और सशक्त समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध होते हैं।

संदर्भ

1. राणा, आर. (2019). *डिजिटल युग में पुस्तकालय सेवाएँ.* नई दिल्ली: एसोसिएट पब्लिशर्स।
2. कुमार, एस. (2020). डिजिटल समावेशन और पुस्तकालय. *पुस्तकालय विज्ञान पत्रिका,* 45(2), 112-118।
3. IFLA. (2018). *Libraries and Digital Inclusion*.
4. Rahmanova, A. (2025). Evolution of libraries in the digital Era: redefining access, education, and cultural preservation. *Library Archive and Museum Research Journal*, *6*(1), 23-38.
5. Hodonu-Wusu, J. O. (2025). The rise of artificial intelligence in libraries: the ethical and equitable methodologies, and prospects for empowering library users. *AI and Ethics*, *5*(2), 755-765.
6. Singh, Nandan, Shraddha Kalla, and S. K. (2025). Overview AI Tools for Library Services and Operations. *Proceedings of 9th National Conference on Transforming Education through Information Literacy: The Librarian's Perspective, 1-2 March 2025*, 133–140.
7. Singh, Nandan, Kalla, Shraddha, Kumari, S. (2025). AI and machine learning in aquaculture. *International Conference on Libraries and Emerging Technologies for Smart Knowledge Ecosystem (ICLET 2025), Sponsored by the Anusandhan National Research Foundation (ANRF)*.
8. Adewojo, A. A., Amzat, O. B., & Abiola, H. S. (2025). AI-powered libraries: enhancing user experience and efficiency in Nigerian knowledge repositories. *Library Hi Tech News*, *42*(2), 12-16.
9. Rahmanova, A. (2025). Evolution of libraries in the digital Era: redefining access, education, and cultural preservation. *Library Archive and Museum Research Journal*, *6*(1), 23-38.
10. Onunka, O., Onunka, T., Fawole, A. A., Adeleke, I. J., & Daraojimba, C. (2023). Library and information services in the digital age: Opportunities and challenges. *Acta Informatica Malaysia*, *7*(1), 113-121.
11. Diseiye, O., Ukubeyinje, S. E., Oladokun, B. D., & Kakwagh, V. (2024). Emerging technologies: Leveraging digital literacy for self-sufficiency among library professionals. *Metaverse Basic and Applied Research*, (3), 2.